# वाड़ी विकास परियोजना

# अमरूद

## वार्षिक कार्यक्रम कैलेण्डर

| क्र.सं. | माह | किये जाने वाले कार्य |
|---|---|---|
| 1. | **जनवरी** (पौष-माघ) | • छोटे पौधों को पाले से बचायें, इसके लिए पौधे के पश्चिमी व उत्तरी भाग में घास लगायें।<br>• माह में दो बार सिंचाई करें।<br>पौधे का पाले से बचाव |
| 2. | **फरवरी** (माघ-फाल्गुन) | • 15 दिनों के अंतराल पर सिंचाई करें।<br>• मिली-बग कीट (सफेद रूई जैसा) नियन्त्रण हेतु मोनोक्रोटोफॉस का 1.5 मि.ली. प्रति लीटर पानी के साथ मिलाकर स्प्रे करें।<br>• मिडो बगीचे में टहनियों की लम्बाई का आधा भाग काट देवें।<br>• नये बगीचे लगाये जा सकते है।<br>मिली-बग |
| 3. | **मार्च** (फाल्गुन-चैत्र) | • अच्छी सिंचाई व्यवस्था होने पर नये बगीचे लगाना संभव होता है।<br>• 15 दिन के अन्तर पर सिंचाई करें।<br>• एक वर्ष के पौधों को यूरिया 250 ग्राम प्रति पौधों के हिसाब से देकर पिलाई करें। प्रतिवर्ष इस मात्रा को इसी अनुपात में बढ़ाते रहें।<br>• पुराने बगीचे में वर्षा ऋतु वाली फसल लेने के लिए सिंचाई प्रारंभ करें।<br>यूरिया |
| 4. | **अप्रेल** (चैत्र-वैशाख) | • 10 दिन के अंतराल पर सिंचाई करें।<br>• नये बगीचे लगाने हेतु खाली खेतों में रेखांकन का कार्य कर 6x6 मीटर दूरी पर 1x1x1 मी. के खड्डे खोदने का कार्य प्रारंभ करें।<br>• पुराने बगीचे में फल मक्खी कीट नियन्त्रण हेतु 1 लीटर पानी में 100 ग्राम शक्कर घोल कर उसमें 10 मि.ली. मेलाथिआन 50% डालकर बगीचे में जगह - जगह कटोरे में भरकर टाँगे।<br>• जहाँ अमरूद के पौधे जस्ते की कमी से प्रभावित है (पत्तियाँ अत्यधिक छोटी रह जाती है और उनकी शिराओं के बीच का भाग पीला पड़ जाता है), वहाँ 6 ग्राम जिंक सल्फेट व 4 ग्राम बुझा हुआ चूना 1 लीटर पानी के हिसाब से मिलाकर स्प्रे करें।<br>फल मक्खी |
| 5. | **मई** (वैशाख-ज्येष्ठ) | • 10 दिन के अंतराल से सिंचाई करें।<br>• नये बगीचो के लिए खोदे गये खड्डों की भराई करें।<br>• फल मक्खी नियन्त्रण के लिए मेलाथिआन 50%EC का उपरोक्तानुसार प्रयोग करें।<br>• जहाँ जस्ते की कमी के लक्षण दिखाई दे वहाँ उपरोक्तानुसार जिंक सल्फेट का स्प्रे करावें।<br>जस्ते की कमी के लक्षण |
| 6. | **जून** (ज्येष्ठ-आषाढ़) | • प्रत्येक 10 दिन के अन्तर पर सिंचाई करें।<br>• पुराने बगीचे में जहाँ शरद ऋतु की फसल ली जाती है वहाँ प्रति पौधा 1 कि.ग्रा. सुपर फास्फेट, 300 ग्राम यूरिया, 400 ग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश तथा 30 कि.ग्रा. देशी सड़ा हुआ खाद देकर गुड़ाई करें व सिंचाई करें।<br>• नये बगीचे में अन्दर के रिक्त स्थान पर सब्जियों की छोटी फसल बुवाई की व्यवस्था करें। • फल मक्खी नियन्त्रण हेतु मेलाथिआन 50%EC दवा को ऊपर बताए तरीके से उपयोग करें। • सघन बागवानी में नई टहनियों को फल लगे भाग को छोड़कर आगे से काटें।<br>फल रहित टहनियों की कटाई |
| 7. | **जुलाई** (आषाढ़-सावन) | • नये बगीचों की स्थापना करें, पौधे रोपाई का कार्य करें।<br>• आवश्यकता होने पर सिंचाई करें।<br>• खरपतवार निकाले, गुड़ाई करें।<br>खरपतवार की गुड़ाई |
| 8. | **अगस्त** (सावन-भाद्रपद) | • नये बगीचों की स्थापना करें, पौधे रोपण का कार्य करें।<br>• आवश्यकता होने पर सिंचाई करें।<br>सिंचाई |
| 9. | **सितम्बर** (भाद्रपद-अश्विन) | • आवश्यकतानुसार सिंचाई करें।<br>• पौधे के नीचे 2 फिट तक एक ही तना रखे नई शाखाएं निकलें तो हटाते रहें।<br>• फल मक्खी बचाव के लिए मेलाथिआन 50 EC दवा उपरोक्त बताए अनुसार उपयोग करें।<br>• प्रति पौधा 250 ग्राम यूरिया देकर गुड़ाई करें। इसी क्रम में बढ़ाते हुए उपयोग करें।<br>नई शाखाओं की कटाई |
| 10. | **अक्टूबर** (अश्विन-कार्तिक) | • प्रति 10 दिन के अन्तर से सिंचाई करावें।<br>• सघन बागवानी में नई टहनियों को फल लगे भाग को छोड़कर आगे से काटें।<br>फल रहित टहनियों की कटाई |
| 11. | **नवम्बर** (कार्तिक-मार्गशीर्ष) | • प्रति 15 दिन के अन्तर से सिंचाई करें।<br>सिंचाई |
| 12. | **दिसम्बर** (मार्गशीर्ष-पौष) | • पुराने बगीचे में फलों की तुड़ाई प्रारम्भ करें।<br>• 20 दिन के अंतराल पर सिंचाई करें।<br>पका हुआ अमरूद |

सौजन्य : TDF, नाबार्ड, जयपुर • प्रकाशक : गायत्री सेवा संस्थान, उदयपुर